सामान्य ज्ञान दर्पण

मार्च 2019

वर्ष 32 अष्टम अंक

इस अंक में...

7 सम्पादकीय

विशेष स्तम्भ

9 समसामयिक सामान्य ज्ञान

16 आर्थिक परिदृश्य

20 राष्ट्रीय परिदृश्य

25 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

32 क्रीड़ा जगत्

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

38 सारभूत तत्व कोष

लेख

42 सामयिक लेख—भारत में 40 हजार रोहिंग्या घुसपैठिए : देश के लिए खतरा

43 यातायात लेख—रेल दुर्घटनाएं : कारण और निवारण

44 समसामयिक आर्थिक लेख—राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) की पहली 'अखिल भारतीय वित्तीय समावेशन सर्वेक्षण—2016-17' रिपोर्ट

45 चिकित्सीय लेख—डिजाइनर बेबीज ला-इलाज बीमारियों से बचाव की अभिनव पहल

हल प्रश्न-पत्र

47 रेलवे भर्ती बोर्ड असिस्टेंट लोको पायलट एवं टेक्निशियन परीक्षा, 2018

53 उत्तर प्रदेश पुलिस कॉंस्टेबिल भर्ती परीक्षा, 2018

63 राजस्थान ग्राम सेवक एवं पंचायत सचिव तथा छात्रावास अधीक्षक ग्रेड-II संयुक्त सीधी भर्ती परीक्षा, 2016

73 हरियाणा एस.एस.सी. ग्रुप 'डी' परीक्षा, 2018

78 एस.एस.सी. संयुक्त स्नातक स्तरीय परीक्षा, 2017 (प्रथम चरण)

87 छत्तीसगढ़ नगर पालिका निगम/नगर पालिका परिषद्/नगर पंचायत राजस्व निरीक्षक भर्ती परीक्षा, 2018

96 इग्नू बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2017

107 छत्तीसगढ़ पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2018

112 उत्तराखण्ड वस्तुनिष्ठ सामान्य ज्ञान

विविध/सामान्य

113 वार्षिक रिपोर्ट—2017-18—सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के बढ़ते चरण—एक दृष्टि में

115 केन्द्र सरकार की नवीन एवं प्रमुख योजनाएं/कार्यक्रम/अभियान

120 ज्ञान वृद्धि कीजिए

121 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

सम्पादकीय

दूसरों की गलतियों से लाभ उठाइए

Smart people learn from their mistakes, but the real sharp ones learn from the mistakes of others.

एक बार सुकरात की गर्दन में रस्सी डालकर एक युवती उनको घोड़े की तरह दौड़ा रही थी. इतने में ही उसका शिष्य सिकन्दर आ गया. अपने गुरुदेव को इस अप्रत्याशित स्थिति में देखकर वह आग बबूला हो गया. सुकरात हँसकर खड़ा हो गया. लड़की भाग गई.

सिकन्दर के प्रश्न के उत्तर में सुकरात ने कहा–नारी के प्रति आकर्षित होकर पुरुष की दुर्गति किस सीमा तक हो सकती है–तुम्हें यह दिखाने के लिए ही मैंने यह नाटक किया था. आशा है तुम ऐसी गलती कभी नहीं करोगे. सिकन्दर ने गुरुदेव की आज्ञा मानी, उसने अन्य पुरुषों द्वारा की जाने वाली गलती से लाभ उठाया और सिकन्दर महान् बन गया.

एक स्थान पर सावधानी का यह बोर्ड लगा हुआ था–यहाँ स्नान करना खतरनाक है. यहाँ स्नान करने का प्रयत्न करने वाले कई व्यक्ति जान गवाँ चुके हैं. कुछ लोग उक्त विज्ञप्ति को पढ़ने के बाद भी वहाँ स्नान करने का दुस्साहस करते हैं और अपने जीवन के लिए संकट उपस्थित करते हैं.

समुद्र में प्रकाश-स्तम्भ बने होते हैं. उनका संकेत रहता है कि इधर मत आओ, क्योंकि इस रास्ते से गुजरते समय कई जल-पोत डूब चुके हैं. परन्तु फिर भी कुछ जहाज अपना जोर आजमाने के लिए उधर से जाने का प्रयत्न करते हैं और संकट का संदेश भेजते हुए दिखाई देते हैं. किसी ने ठीक ही कहा है–Fools jump in where angels fear to tread अर्थात् जहाँ फरिश्ते कदम रखते हुए डरते हैं, वहाँ मूर्ख व्यक्ति कूद पड़ते हैं.

एक बार एक साक्षात्कार में एक प्रत्याशी को केवल इस कारण अस्वीकार कर दिया गया, क्योंकि वह अपनी बारी आने के समय उपस्थित नहीं था, परन्तु फिर भी हमारे कुछ युवा प्रत्याशी समय का ध्यान नहीं रखते हैं और अपने साक्षात्कार का अवमूल्यन करते हुए देखे जाते हैं. यही कहा जाएगा कि इस वर्ग के व्यक्ति दूसरों की गलती से लाभान्वित नहीं होना चाहते हैं. सम्भवतः वे देर से जाकर स्वयं यह देखना चाहते हैं–क्या इस कारण हम भी अस्वीकार किए जा सकते हैं. परिणाम यह होता है कि विलम्ब से पहुँचने के कारण अथवा अपनी बारी के प्रति सजग न रहने के कारण अनेक प्रत्याशी-जिनमें वास्तव में कई योग्य प्रत्याशी होते हैं, असफलता का मुँह देखने को विवश होते हैं, समग्ररूप में कहा जा सकता है कि दूसरों की गलतियों से लाभ न उठा सकने के कारण अनेक व्यक्ति हानि उठाते हैं और मूर्ख बनते हैं. मानव स्वभाव की इसी दुर्बलता को लक्ष्य करके चीन के विचारक कन्फ्यूशियस ने लिखा है कि–व्यक्ति सामान्यतः निर्णय करने के तीन मार्ग अपनाते हैं–Meditation–ध्यान द्वारा निर्णय, अनुकरण द्वारा तथा स्वयं प्रयोग द्वारा. प्रथम सर्वश्रेष्ठ होता है, द्वितीय मार्ग सर्वाधिक सरल होता है तथा तृतीय मार्ग सर्वाधिक कटु होता है. आश्चर्य की बात है कि अधिकांश व्यक्ति तृतीय मार्ग का अवलम्बन करते हैं और इस लोकोक्ति को सार्थक करना चाहते हैं कि हम ठगाकर ही ठाकुर बन सकते हैं. सम्भवतः यही कारण है कि हम दूसरों की गलतियों से लाभान्वित नहीं होना चाहते हैं.